

शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

Laxmi Singh^{1*} Dr. Vijay Shukla²

¹ Research Scholar, Swami Vivekananda University Sagar MP

² Professor, Department of Education, Swami Vivekananda University, Sagar, MP

सारांश - वर्तमान समय में जिन किशोरों को पारिवारिक संघर्ष का सामना करना पड़ता है, जिसके कारण उनका समायोजन विद्यालय, प्राचार्य, शिक्षकों एवं अपनी मित्र मंडली एवं अपने आस-पास के वातावरण से उनमें मानसिक तनाव का सामना करना पड़ता है। पारिवारिक संघर्ष के कारण उनमें निराशा, अवसाद सामाजिक अलगाव, विद्यालयों में लगातार असफलता, असहयोग सहानुभूतिपूर्वक वातावरण न मिलना जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जिसके कारण उनमें कुसमायोजन की स्थिति पैदा हो जाती है। जिससे वे हर क्षेत्र में जैसे शैक्षिक, सामाजिक, संवेगात्मक रूप से पिछड़ने लगते हैं। इन विषम परिस्थितियों में समायोजन ही एक मात्र सफलता का मार्ग प्रशस्त करता है।

-----X-----

भूमिका

किशोरावस्था सांवेगिक अस्थिरता की वह अवस्था है, जिसमें किशोर अनेक परिवर्तनों के जंजाल में स्वयं को घिरा हुआ पाता है तथा मानसिक रूप से स्वयं को समस्त परिवर्तनों एवं समस्याओं के निराकरण करने में सक्षम मानते हुए एक जिम्मेदार व्यक्ति की भूमिका का निर्वाह करने लगता है। इस संवेगात्मक अस्थिरता की अवस्था में किशोर अत्यन्त उमंगित कल्पनालोक में डूबा हुआ, नायक पूजा में लीन रहता है।

हरलौक (1979) के अनुसार इस अवस्था का प्रसार 11-13 वर्ष से लेकर 21 वर्ष तक माना जाता है। किशोरावस्था में किशोर में शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सांवेगिक तथा सामाजिक विकास स्पष्ट रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। इस प्रकार किशोरावस्था शारीरिक परिपक्वता के साथ-साथ मानसिक, सांवेगिक परिपक्वता की भी अवस्था है। इस अवस्था में किशोर का शरीर बालकों से भिन्न प्रौढ़ों के समान हो जाता है। इस संक्रमणकालीन अवधि में किशोर स्वयं को दो अवस्थाओं के मध्य (वयःसंधि) पाता है, अतः वह परिवर्तनशील परिस्थितियों के बीच अपनी भूमिकाओं के निर्वाह में अस्त-व्यस्त या किंकर्तव्यविमूढ़ सा हो जाता है। इस अवधि में उस पर अपेक्षाकृत अधिक जिम्मेदारियों का बोझ आ जाता है,

जबकि बाल्यावस्था में उसने स्वतंत्रता का सर्वाधिक उपयोग किया होता है।

किशोर के बचकाने व्यवहार पर उसे व्यंग्य या कटाक्ष सुनने पड़ते हैं तथा आयु के अनुरूप आचरण करने की स्थिति में सुधार करने की हिदायत दी जाती है, जिससे वह भ्रमित हो जाता है। इस अवस्था में किशोर अपनी स्थिति तथा भूमिका के विषय में अनेक प्रकार की समस्याओं के प्रति समायोजन स्थापित करने का प्रयास करता है। इन समस्याओं का सीधा प्रभाव किशोरों तथा किशोरियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। किशोरावस्था की समस्याओं में मुख्यतः स्कूल में समायोजन की समस्या, यौन व्यवहार सम्बन्धी समस्या, नैतिक व्यवहार सम्बन्धी समस्या, व्यावसायिक समायोजन सम्बन्धी समस्या, वित्तीय समस्या, मादक वस्तुओं के सेवन की समस्या, आत्महत्या आदि की समस्याएं सम्मिलित हैं।

प्रायः किशोरों को स्कूल में शिक्षकों एवं साथियों के साथ उचित समायोजन की समस्या का सामना करना पड़ता है। कतिपय अध्यापक अपनी रूढ़िवादी प्रकृति के फलस्वरूप किशोरों को किसी भी प्रकार की स्वतंत्रता देने से इन्कार कर देते हैं और बालक समझकर उनको कभी-कभी शारीरिक दण्ड भी दे बैठते हैं। स्कूल का पाठ्यक्रम मूलतः सैद्धान्तिक होता है और

मुश्किल से छात्रों की उनमें सहभागिता हो पाती है। कक्षा में चुपचाप उन पाठ्यक्रमों पर भाषण सुनना उनमें उबाऊपन उत्पन्न करता है जो उनकी समस्याओं को और भी बढ़ा देता है।

सिंह (2009) के अनुसार किशोर किसी भी सामाजिक कार्यक्रम में स्वतंत्र होकर भाग लेना चाहते हैं जिसकी अनुमति माता-पिता से प्रायः नहीं मिलती। इसका परिणाम यह होता है कि उनमें तथा माता-पिता में तनाव बढ़ता रहता है और पारिवारिक संघर्ष तीव्र हो जाता है। पारिवारिक संघर्ष के कारण किशोरों को अपने विकासात्मक कार्यों को पूरा करने में माता-पिता से उचित दिशा-निर्देश नहीं मिल पाता। इससे उनकी समस्याएं और भी जटिल हो जाती हैं। ऐसा देखा जाता है कि जिन किशोरों को पारिवारिक संघर्ष का सामना करना पड़ता है, उनका समायोजन स्कूल अधिकारियों, साथियों एवं पास-पड़ोस के लोगों से भी तनावपूर्ण होता है। कभी-कभी पारिवारिक संघर्ष के कारण उनमें अवसाद, सामाजिक विलगाव, स्कूल में लगातार असफलता जैसी जटिल समस्याएं आत्महत्या जैसी प्रवृत्ति को जन्म देती हैं। इस विषम परिस्थिति में समायोजन की सफलता का मार्ग प्रशस्त करता है।

समायोजन-अर्थ एवं परिभाषाएँ (Adjustment – Meaning and Definitions)

हमारा जीवन चुनौतियों एवं संघर्षों से परिपूर्ण है। बालकपन से हमें जीवन की विविध समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जो जिस सीमा तक जितने अच्छे ढंग से जीवन संग्राम की इस लड़ाई को लड़ता जाता है वह उतने ही अच्छे रूप से सफलता से प्रगति करता रहता है। मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के अतिरिक्त जीवन में हम बहुत कुल चाहते हैं और यही चाह हमें पल-पल संघर्ष करने को प्रेरित करती है। परन्तु बहुत बार ऐसा भी होता है कि जो हम चाहते हैं जिसके लिए हम दिन-रात परिश्रम करते हैं उस उद्देश्य की प्राप्ति हमें नहीं हो पाती। उदाहरण के लिए एक बालक इंजीनियरिंग कालेज में प्रवेश पाने के लिए तरह-तरह की परीक्षा देता है परन्तु अथक परिश्रम के बाद भी उसे सफलता नहीं मिलती। इस हालत में वह अपने लक्ष्य को ही परिवर्तित कर देता है तथा बी.एससी. में प्रवेश लेकर आगे एम.एससी. तथा प्राध्यापक बनने की बात को पूरा करने के लिए जुट जाता है। एक क्षेत्र में असफलता के बाद दूसरे किसी क्षेत्र का चुनाव करना, अपने लक्ष्य की ऊँचाई को अपनी योग्यता और परिस्थितियों के अनुसार घटा देना, इस प्रकार के संशोधित एवं परिवर्तित व्यवहार को ही समायोजन की संज्ञा दी जाती है।

यह समायोजन शब्द का काफी सामान्य और प्रचलित अर्थ है। इसका अर्थ को और अच्छी तरह स्पष्ट रूप से समझने के लिए हमें

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गई निम्न परिभाषाओं पर विचार करना अधिक उपयुक्त रहेगा।

1. **एम.एस. शेफर** - समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई जीवधारी अपनी आवश्यकताओं तथा इन आवश्यकताओं की संतुष्टि से सम्बन्धित परिस्थितियों में संतुलन बनाये रखता है।
2. **गेट्स जेरसिल्ड एवं अन्य** - समायोजन एक ऐसी सतत् प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक व्यक्ति अपने व्यवहार में इस प्रकार से परिवर्तन करता है कि उसे स्वयं तथा अपने वातावरण के बीच और अधिक मधुर संबंध स्थापित करने मदद मिल सकें।
3. **वोनहेली** - हम समायोजन शब्द को अपने आपको मनोवैज्ञानिक रूप से जीवित रखने के लिए तैसे ही प्रयोग में ला सकते हैं जैसे कि जीवशास्त्री अनुकूलन (Adaptation) शब्द का प्रयोग किसी जीव को शारीरिक या भौतिक दृष्टि से जीवित रखने के लिए करते हैं।

अध्ययन की उद्देश्य

1. शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्रों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. शासकीय छात्रों एवं शासकीय छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्रों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

1. शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्रों के समायोजन पर सार्थक अंतर नहीं है।
2. शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्राओं के समायोजन पर सार्थक अंतर नहीं है।
3. शासकीय छात्रों एवं शासकीय छात्राओं के समायोजन के स्तर सार्थक अंतर नहीं है।

4. शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्रों के समायोजन के स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है।

न्यादर्श-

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत भोपाल जिले के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 9वीं एवं 10वीं के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है। जिसमें 150 छात्र एवं 150 छात्राएं सम्मिलित हैं।

उपकरण-

प्रस्तुत अध्ययन में समायोजन मापने के लिये आर.पी. सिंह एवं ए.के.पी. सिन्हा द्वारा निर्मित समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया है।

शोध विधि-

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का सारणीयन-

तालिका क्रमांक 1

शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्रों के समायोजन की तुलना

[N=300]

क्र.	घटक	शासकीय छात्र		अशासकीय छात्र		क्रांतिक अनुपात	व्याख्या	
		M	SD	M	SD		0.05	0.01
1.	संवेगात्मक समायोजन	4.75	2.20	5.45	2.50	2.58	S	NS
2.	सामाजिक समायोजन	4.66	2.12	4.72	2.70	0.211	NS	NS
3.	शैक्षिक समायोजन	5.10	2.79	5.65	3.10	1.62	NS	NS
4.	समग्र समायोजन	14.51	5.22	15.82	6.57	1.91	NS	NS
5.	df 298						1.97	2.59

तालिका क्रमांक 1 में शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्रों के समायोजन की तुलना को दर्शाया गया है। संवेगात्मक समायोजन पर शासकीय छात्रों का मध्यमान (4.75) एवं अशासकीय छात्रों का मध्यमान (5.45) है। 0.05 स्तर पर "टी" मूल्य पर सार्थक है एवं 0.01 स्तर पर "टी" पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्रों को संवेगात्मक समायोजन का स्तर समान है।

सामाजिक समायोजन पर शासकीय छात्रों का मध्यमान (4.66) एवं अशासकीय छात्रों का मध्यमान (4.72) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर "टी" पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्रों का सामाजिक समायोजन का स्तर समान है।

शैक्षिक समायोजन पर शासकीय छात्रों का मध्यमान (5.10) एवं अशासकीय छात्रों का मध्यमान (5.65) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर "टी" मूल्य पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्रों का शैक्षिक समायोजन का स्तर समान है।

समग्र समायोजन पर शासकीय छात्रों का मध्यमान (14.51) एवं अशासकीय छात्रों का मध्यमान (15.82) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर "टी" पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्रों का समग्र समायोजन का स्तर समान है।

तालिका क्रमांक 1

शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्राओं के समायोजन की तुलना

[N=300]

क्र.	घटक	शासकीय छात्राएँ		अशासकीय छात्राएँ		क्रांतिक अनुपात	व्याख्या	
		M	SD	M	SD		0.05	0.01
1.	संवेगात्मक समायोजन	4.35	2.23	4.21	22.69	0.56	NS	NS
2.	सामाजिक समायोजन	4.62	3.12	5.22	2.60	1.81	NS	NS
3.	शैक्षिक समायोजन	4.25	2.35	4.55	2.80	1.07	NS	NS
4.	समग्र समायोजन	13.42	6.33	13.98	6.20	0.77	NS	NS
5.	df 298						1.97	2.59

तालिका क्रमांक 2 में शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्राओं के समायोजन की तुलना को दर्शाया गया है। संवेगात्मक समायोजन पर शासकीय छात्राओं का मध्यमान (4.35) एवं अशासकीय छात्राओं का मध्यमान (4.21) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर "टी" पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्राओं को संवेगात्मक समायोजन का स्तर समान है।

सामाजिक समायोजन पर शासकीय छात्राओं का मध्यमान (4.62) एवं अशासकीय छात्राओं का मध्यमान (5.22) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर "टी" पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः

शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्राओं का सामाजिक समायोजन का स्तर समान है।

शैक्षिक समायोजन पर शासकीय छात्राओं का मध्यमान (4.25) एवं अशासकीय छात्राओं का मध्यमान (4.55) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर "टी" मूल्य पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्राओं का शैक्षिक समायोजन का स्तर समान है।

समग्र समायोजन पर शासकीय छात्राओं का मध्यमान (13.42) एवं अशासकीय छात्राओं का मध्यमान (13.98) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर "टी" पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्राओं का समग्र समायोजन का स्तर समान है।

तालिका क्रमांक 3

शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्राओं के समायोजन की तुलना

[N=300]

क्र.	घटक	शासकीय छात्र		अशासकीय छात्राएँ		क्रांतिक अनुपात	व्याख्या	
		M	SD	M	SD		0.05	0.01
1.	संवेगात्मक समायोजन	4.75	2.20	4.21	2.09	2.18	S	NS
2.	सामाजिक समायोजन	4.66	2.12	5.22	2.60	2.05	S	NS
3.	शैक्षिक समायोजन	5.10	2.79	4.55	2.80	1.71	NS	NS
4.	समग्र समायोजन	14.51	5.22	13.98	6.20	0.80	NS	NS
5.	df 298						1.97	2.59

तालिका क्रमांक 3 में शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्राओं के समायोजन की तुलना को दर्शाया गया है। संवेगात्मक समायोजन पर शासकीय छात्रों का मध्यमान (4.75) एवं अशासकीय छात्राओं का मध्यमान (4.21) है। 0.05 स्तर पर "टी" पर सार्थक अंतर है एवं 0.01 स्तर पर "टी" पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्राओं को संवेगात्मक समायोजन का स्तर समान है।

सामाजिक समायोजन पर शासकीय छात्रों का मध्यमान (4.66) एवं अशासकीय छात्राओं का मध्यमान (5.22) है। 0.05 स्तर पर "टी" पर सार्थक अंतर है एवं 0.01 स्तर पर "टी" पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्राओं का सामाजिक समायोजन का स्तर समान है।

शैक्षिक समायोजन पर शासकीय छात्रों का मध्यमान (5.10) एवं अशासकीय छात्राओं का मध्यमान (4.55) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर "टी" मूल्य पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः शासकीय

छात्रों एवं अशासकीय छात्राओं का शैक्षिक समायोजन का स्तर समान है।

समग्र समायोजन पर शासकीय छात्रों का मध्यमान (14.51) एवं अशासकीय छात्राओं का मध्यमान (13.98) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर "टी" पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्राओं का समग्र समायोजन का स्तर समान है।

तालिका क्रमांक 4

शासकीय छात्राएँ एवं अशासकीय छात्रों के समायोजन की तुलना

[N=300]

क्र.	घटक	शासकीय छात्राएँ		अशासकीय छात्र		क्रांतिक अनुपात	व्याख्या	
		M	SD	M	SD		0.05	0.01
1.	संवेगात्मक समायोजन	4.35	2.23	5.45	2.50	4.00	S	S
2.	सामाजिक समायोजन	4.62	3.12	4.72	2.70	0.28	NS	NS
3.	शैक्षिक समायोजन	4.25	2.35	5.65	3.10	4.41	S	S
4.	समग्र समायोजन	13.42	6.33	15.82	6.57	3.22	S	S
5.	df 298						1.97	2.59

तालिका क्रमांक 4 में शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्रों के समायोजन की तुलना को दर्शाया गया है। संवेगात्मक समायोजन पर शासकीय छात्राओं का मध्यमान (4.35) एवं अशासकीय छात्रों का मध्यमान (5.45) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर "टी" पर सार्थक अंतर है। अतः शासकीय छात्राओं का संवेगात्मक समायोजन का स्तर अशासकीय छात्रों से उच्च है।

सामाजिक समायोजन पर शासकीय छात्राओं का मध्यमान (4.62) एवं अशासकीय छात्रों का मध्यमान (4.72) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर "टी" पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्रों का सामाजिक समायोजन का स्तर समान है।

शैक्षिक समायोजन पर शासकीय छात्राओं का मध्यमान (4.25) एवं अशासकीय छात्रों का मध्यमान (5.65) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर "टी" मूल्य पर सार्थक अंतर है। अतः शासकीय छात्राओं का शैक्षिक समायोजन का स्तर अशासकीय छात्रों से उच्च है।

समग्र समायोजन पर शासकीय छात्राओं का मध्यमान (13.42) एवं अशासकीय छात्रों का मध्यमान (15.82) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर "टी" पर सार्थक अंतर है। अतः शासकीय

छात्राओं का समग्र समायोजन का स्तर अशासकीय छात्रों से उच्च है।

निष्कर्ष-

- शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्रों का समग्र समायोजन का स्तर समान है।
- शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्राओं का समग्र समायोजन का स्तर समान है।
- शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्राओं का समग्र समायोजन का स्तर समान है।
- शासकीय छात्राओं का समग्र समायोजन का स्तर अशासकीय छात्रों से उच्च है।

परिकल्पना परीक्षण-

1. शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्रों का समग्र समायोजन का स्तर समान है अर्थात् सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।
2. शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्राओं का समग्र समायोजन का स्तर समान है अर्थात् सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।
3. शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्राओं का समग्र समायोजन का स्तर समान है अर्थात् सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।
4. शासकीय छात्राओं का समग्र समायोजन का स्तर अशासकीय छात्रों से उच्च है अर्थात् सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

सुझाव-

1. समायोजन स्तर को चिन्हित कर किशोरों एवं किशोरियों के लिए आवश्यक वातावरण सृजन तथा आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन, निदानात्मक/उपचारात्मक शिक्षक द्वारा निम्न शैक्षिक उपलब्धि को उच्च शैक्षिक उपलब्धि स्तर तक परिणत किया जा सकता है।

2. अध्यापकों द्वारा किशोरों तथा किशोरियों के साथ समान व्यवहार अपेक्षित है। दोनों को समान अवसर उपलब्ध कराकर संकोची प्रवृत्ति को न्यून किया जा सकता है।
3. अशिक्षित माता-पिता को शिक्षा के अन्य अभिकरणों द्वारा शिक्षित कर उनमें सकारात्मक प्रवृत्ति विकसित की जाए ताकि वे बच्चों का विपरीत परिस्थितियों में भी मार्गदर्शन कर सकें।
4. किशोरों तथा किशोरियों का पाठ्यसहगामी क्रियाकलापों में समान एवं समुचित भागीदारी को सुनिश्चित कराकर आत्मविश्वास की वृद्धि हेतु आवासीय परिवेश प्रोत्साहित किया जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. गैरेट, एच.ई. (1981). मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी दशम् संस्करण, बी.एफ. एण्ड संस बाम्बे.
2. गुप्ता, एस.पी. एवं गुप्ता, अलका (2007). आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, पीएच.डी. इलाहाबाद.
3. सिंह, अरुण कुमार (2009). शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन, पीएच.डी. पटना.
4. हरलाक, ई.वी. (1979). डेवलपमेंटल साइकोलाजी, टी.एम. एवं पब्लिकेशन, नई दिल्ली.
5. आई.ए., गेट्स एवं जरसील (1958). शिक्षा मनोविज्ञान, न्यूयार्क.
6. कपिल, एच.के. (2009). सांख्यिकीय के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
7. पाठक, पी.डी. (2009). शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
8. मंगल, एस.के. (2010). शिक्षा मनोविज्ञान पी.एच.आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली.
9. भटनागर, सुरेश (2010). शिक्षा मनोविज्ञान, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.

10. काशीनाथ, एच.एम. (2003). एडजस्टमेंट कम्पोनेंट ऑफ स्टूडेंट्स स्टडींग इन जवाहर नवोदय विद्यालय, ए कलस्टर एनालिसिस, जनरल ऑफ कम्युनिटी गाइडेन्स एण्ड रिसर्च 20(3), पृ. 295-304.

Corresponding Author

Laxmi Singh*

Research Scholar, Swami Vivekananda University
Sagar MP